पशुधन का कृषक समाज पर सामाजिक–आर्थिक प्रभाव

(टोंक जिले के विशेष संदर्भ में)

Socio- Economic Impact of Livestock on Agrarian Society

(With Special Reference in Tonk District)

A Synopsis

Submitted for Partial Fullfilment for the Ph.D. Degree

In the faculty of Social Sciences

MDS UNIVERSITY, AJMER (RAJ.) 2016

Research Supervisor

Dr. Gajender Singh
Sr. Lecturer
Department of Geography
Govt. P.G. College, Tonk(Raj.)

Researcher

Neelu Chaturvedi

RESEARCH DIRECTOR

M.D.S UNIVERSITY AJMER

(Rajasthan)

SUBJECT- REVISEDSynopsis. ON **"SOCIO ECONOMIC IMPACT OF LIVESTOCK ON AGARIAN SOCIETY (With Special Reference in Tonk District)" "पशुधन का कृषक समाज पर सामाजिक–आर्थिक प्रभाव (टोंक जिले के विशेष संदर्भ में)"**

Respected sir ,

I have corrected my synopsis like wise committee has given to me. So I am sending my revised synopsis on topic **"socio- economic impact of livestock on agarian society (With Special Reference in Tonk District) " "पशुधन का कृषक समाज पर सामाजिक–आर्थिक प्रभाव (टोंक जिले के विशेष संदर्भ में)"** kindly find it.

And I requested you to please gave registered as soon as possible .

Thanking you

Your sincerely

Neeluchaturvedi

Principal - P.G College, Tonk

Ref No. 7100 Date : 15-12-16

PhD synopsis end Titled as **SOCIO ECONOMIC IMPACT OF LIVESTOCK ON AGARIAN SOCIETY" (With Special Reference in Tonk District) पशुधन का कृषक समाज पर सामाजिक–आर्थिक प्रभाव (टोंक जिले के विशेष संदर्भ में)** of Neelu Chaturvedi D/O Sh. Rameshwar Chaturvedi, Research Scholar of Geography department, Govt. College Tonk is forwarded to the Director Research M.D.S University, Ajmer.

HEAD OF THE DEPARTMENT — Research Supervisor — PRINCIPAL

व्याख्याता
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
टोंक (राज०)

व्याख्याता
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
टोंक (राज०)

प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
टोंक (राज.)

M.D.S. UNIVERSITY AJMER
Receipt No........
Date 16/12/16

APPENDIX-IV-A
Format for Outline (Synopsis) of Proposed Research Work
(to be supplied in Four Copies)
(Reference Ord. 124.11)

1. Nameof Scholar (In English)	:	Neelu Chaturvedi
(in Hindi)	:	नीलू चतुर्वेदी
2. Title of the Research Work (in English)	:	Socio-Economic Impact of Livestock on Agrarian Society (With Special Reference in Tonk District)
(in Hindi)	:	पशुधन का कृषक समाज पर सामाजिक आर्थिक प्रभाव। (टोंक जिले के विशेष संदर्भ में)
Location	:	Tonk

a. Institution/Department where the work is to be done **Govt. P.G. College Tonk.**

b. Geographical area of investigation **Tonk**

3. Introduction Importance of Proposed Investigation, Objective **8-9,16**
4. Review (Work Already done on the subject of proposed Research Study).**12-15**
5. Research Gaps Identified in the proposed field of investigation. (Based on the review).**15-16**
6. Major Hypotheses, if any. **17**
7. Research Methodology. **18-20**
8. List of bibliography Cited. **23-28**

नीलू चतुर्वेदी 15/12/16
Signature of the Candidate with date

Outline Approved Name and

Signature of Supervisor with date & seal.

व्याख्याता
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
टोंक (राज०)

APPENDIX-VI

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY
AJMER

Certificate By Supervisor
Certified that

1. I am willing to guide the research work of Km. **NEELU CHATURVEDI** on the above subject if he/she is registered for Ph.D.
2. To the best of my knowledge, the subject selected has not been studied and is not being studies so far in any University.
3. The subject is of sufficient scope to keep the candidate engaged for two years.
4. The subject will lead to a valuable contribution. I have seen and approved the outline of proposed research work submitted by the candidate.
5. I have **04** (give numbers) Research candidates registered under my supervision and the serial number of this candidate whose application is being forwarded for registration is **05** (give the serial number).
6. The candidate is not in a close relation (the term of close relation is defined in the examination ordinance of the University)

Signature of the
Supervisor with date

Certified that the available facilities will be extended to Km. **NEELU CHATURVEDI** for research work if he/she is registered for Ph.D.

Signature of the Principal/
Director of the Institution with date

DBO Code-0294

Signature of the Head
Department wtih date

प्रस्तावना (Introduction)

भूगोल भूतल पर होने वाली भौतिक व मानवीय अन्तः क्रियाओं का अध्ययन है। मानव ने भूतल पर अपने कार्योसे भौतिक तत्वोंमें परिवर्तन करके आर्थिक व सांस्कृतिक भू–दृश्यों का विकास किया है। भारतीय अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि आधारित है। कृषि न केवल कृषक समुदाय के जीवन यापनका साधन है। अपितु विभिन्न उद्योगो के लिए कच्चा माल भी उपलब्ध करवाती है। देश की कुल जनसंख्या का दो तिहाई भाग वर्तमान समय में भी कृषि पर निर्भर है। देश में जलवायु विभिन्नता के कारण कृषि पद्धतियां एक समान न होकर विभिन्नताएं धारण किए हुए है।

पूर्व–पाषाणकाल में वनवासी मानव जंगली भैंसा, गोपशु, शूकर, कुत्ता, हाथी, चीतल, नीलगाय, बंदर, गैंडा, हरिण, तेंदुआ, बाघ, पक्षी, मछली, कछुआ आदि से भली भांति परिचित था तथा उनका शिकार करके अपना पेट भरता था।

प्रागैतिहासिक कालमें शिकार की अनिश्चितता तथा भोजन की समस्या सुलझाने के लिए मनुष्य ने शिकार के साथ ही कृषि एवं पशुपालन अपनाया।

उत्तर पाषाण काल में मानव के भोजन में माँस, दूध, अनाज, कंद, फल आदि भोजन के भाग थे। पशु बलि देने की प्रथा प्रचंलित हो गई थी।

धातु काल में मनुष्य ने पशुओं से होने वाले लाभों को अच्छी तरह से समझा जिसके फलस्वरूप पशुपालन के विकास में तेजी आई।

भारतीय परिवेश में कृषि के साथ–साथ पशुपालन भी प्राचीन काल से सम्पूरक व्यवसाय के रूप में भूमिका निभा रहा है। पशुपालन न केवल दुग्ध उपलब्ध करवाता है।अपितु वर्तमान समय में भी कृषि से संबधित छोटे बडे कार्य सम्पन्न करवाने एवं उपभोक्ता उद्योगो के लिए सामग्री प्रदान करने में तथा खाद्य

सुरक्षा में आधार प्रदान करता है। पशुपालन का राष्ट्रीय आय में आज भी एक विशेष स्थान है यह व्यवसाय ग्रामीण कृषक समाज को न केवल खाद्य उत्पाद (दूध, मांस, अण्डे) उपलब्ध करवाता है। अपितु रोजगार में भी स्थान बनाये हुये हैं।

भारत के विभिन्न हिस्सो में भौगोलिक कारकों के कारण कृषि के समान पशुपालन की विभिन्न पद्धतियों मेंभी भिन्नता पाई जाती है। पशु लाखो लोगो के लिए सस्ते पोष्टिक आहार उपलब्ध कराने के अलावा कृषको के परिवार की आय का प्रमुख स्त्रोत है। विशेषतःभूमिहीन मजदूरों, छोटे और सीमांत किसानो और महिलाओ के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है, क्योकि भूमिहीन मजदूरो के पास वर्ष भर करने के लिए कार्य नही होते परन्तु पशुपालन सतत व्यवसायिक प्रक्रिया है। इससे निरन्तर रोजगार प्राप्त कर भूमिहीन मजदूर आय का अच्छा साधन प्राप्त कर लेते है। छोटे और सीमांत किसानो का आय स्तर निम्न ही होता है। अतः वे अल्प भूमि में अत्यधिक लाभ को पशुपालन द्वारा प्राप्त कर सकते है। तथा बनती, बिगडती कृषि परिस्थितियों में भी निरन्तर आर्थिक लाभ कमा सकते है।

पशुपालन में व्यवहारिक रूप से देखा जाए तो सर्वाधिक श्रम महिलाओं का लगता है। पशुपालन से जुडे सभी आधारिकृत कार्य महिलाओ के द्वारा ही सम्पन्न किए जाते है। तथा इस रोजगार से महिलाओ को सशक्त बनाया जा सकता है। उन्हें घरेलू कार्यो के साथ साथ व्यापारिक दक्षता भी प्रदान की जा सकती है। जो सांस्कृतिक दृश्यो में उनकी प्रभावी भूमिका को सुनिश्चित करेगी। भारतीय जन मानस ने पशुओ को अपनी संस्कृति में विशेष स्थान प्रदान किया है। विशेषतः दुधारू पशुओं की यहाँ पूजा भी की जाती है। बड़ेउपलक्ष पर उनका विशेष महत्व होता है। जैसे दीपावली पर्व पर गोवंश का पूजन लक्ष्मी मानकर

किया जाता है। साथ ही राजस्थान के पशु मेंले सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को सुदृढ़ करने में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

सामाजिक दृष्टिकोण से कृषक समुदाय ने पशुपालन को आवश्यक माना है। पशुधन कृषकों के भावनात्मक पहलु को भी प्रभावित करते है। राजस्थान राज्य के कई क्षेत्रो में विवाह समारोह में वधु पक्ष की ओर से पशुधन भेंट स्वरूप प्रदान किया जाता है। राजस्थान के कई अंचलो में आज भी पशुओ को परिवहन के रूप में प्रयोग लाया जाता है। कृषक समुदाय आर्थिक व सामाजिक स्वरूप की मौलिकता से कृषि कार्यो पर आश्रित है। अतः उनका सामना त्वरित मानसूनी परिवर्तनो से होता रहता है। जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव उनके आर्थिक परिस्थिती पर तथा अप्रत्यक्ष प्रभाव सामाजिक परिवेश पर दिखाई देता है। इन विपरीत प्राकृति परिस्थितियों में पशुधन, सूखा, अकाल तथा अन्य प्राकृतिक आपदाओं के प्रकोप के दुष्प्रभावो से रक्षा हेतु बीमा का काम करते है अर्थात् प्रकृतिक की भयावकविपरीत परिस्थितियों में कृषक के जीवन में पशुधन अपना विशेष स्थान रखते है। राष्ट्र को आर्थिक रूप से सम्बल प्रदान करते है। इसलिए यह आवश्यक है कि पशुपालन व्यावसायिक रूप में प्रारंभ करने के पूर्व, स्थानीय पर्यावरण, क्षेत्रीय नस्ल, पशुओं की संख्या, उपलब्ध संसाधनों एवं पशुपालन के आर्थिक पक्ष का आंकलन अवश्य कर लेना चाहिए। आजकल, वैश्विक व्यापार (Global trade) नियमों की दृष्टि में पशुओं से प्राप्त दूध व माँस में रसायनजनित अवशेषों की उपस्थिति से मनुष्य के स्वास्थ्य को होने वाले नुकसान को पूरी गंभीरता से महसूस किया जा रहा है। अतः कृषि जिंस की भाँति जैविक पशुपालन (Organic animal farming) पर विशेष जोर दिया जा रहा है।

भारत विश्व के विकासशील देशो में से एक अग्रणी देश है। साथ ही दूध उत्पादन देशो में भी इसका नाम अग्रणी स्थल पर रखा गया है। यह भारत की सकल घरेलू उत्पादो में(GDP)अपना मुख्य स्थान रखते है। अतः राष्ट्रीय

अर्थव्यवस्था में पशुधन कृषि के सम्पूरक व्यवसाय के रूप मेंहै। साथ ही एक भिन्न व्यवसाय स्वरूप में अपना मुख्य स्थान रखता है। (GDP)में अनुमानतः इसका योगदान 18000 करोड रूपय का अनुमानित है। जिसमें 70 प्रतिशत दूध तथा दूध उत्पादो से,11.5 प्रतिशतमाँस और माँस उत्पादोंसे 7.8प्रतिशत गोबर ईधन में सम्मिलित है।

कृषि एवं सहकारिता मंत्रालय के पशुपालन विभाग की रिपोर्ट (2004) के अनुसार कृषि आधारित कुल घरेलू आय (रू.4560 बिलियन) में पशुपालन का 26 प्रतिशत योगदानहै तथा देश के सकल घरेलू उत्पादन (Gross domestic production) में वर्तमान दरों पर पशुधन ने 3.9प्रतिशत (2013-2014) का योगदान किया है।

पशुपालन सीमांत कृषकों, कृषि मजदूरों तथा बेरोजगार युवकों के लिए अतिरिक्त आय तथा रोजगार का एक लोकप्रिय साधन है। पशुपालन से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में लगभग दो करोड़ लोगों को रोजगार मिलता है जिसमें महिलाओं की भागीदारी लगभग 70 प्रतिशत है। ग्रामीण इलाकों में रोजगारोन्मुखी व्यवसाय में कृषि आधारित रोजगारों की अपेक्षा पशुपालन आधारित व्यवसाय को अधिक लोगों द्वारा रोजगार साधन के रूप में अपनाया जाता है। इसके अतिरिक्त पशुओं से प्राप्त रक्त, चर्बी, हड्डियाँ तथा खाल कई प्रकार के उद्योग धंधों की प्रमुख कच्चीसामग्रियाँ है। समग्र कृषि उत्पादों से प्राप्त आय में पशुपालन से प्राप्त लगभग एक चौथाई भाग में, भारवाही पशु शक्ति (Animal draft power) का मूल्य सम्मिलित नहीं है। एक आंकलन के अनुसार पशु शक्ति का योगदान 30,000 मेंगावाट बिजली उर्जा या 40 मिलियन अश्व शक्ति 10,000 करोड़ रू. के बराबर आता है।

भारतीय पशुधन गणना (2012) के पूर्णावलोकन से यह सारांश सामने आता है कि देश के 32,87,263 वर्ग किमी क्षेत्रफल में 1,210,854,977 मिलियन

(जनगणना 2011) लोग (382 व्यक्ति प्रति वर्ग. किमी) रहते हैं। इस जनसंख्या का 72.22 प्रतिशत भाग आज भी ग्रामीण तथा शेष शहरी भारत में निवास कर रहा है। देश के संपूर्ण क्षेत्रफल में 6,75,538 वर्ग किमी (20.55 प्रतिशत) वन क्षेत्र (Forest cover) के अधीन है। पशुगणना रिपोर्ट की समीक्षा में पशुपालन एवं डेयरी विभाग, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार का यह निष्कर्ष है कि पिछली पशुगणना (2007) की तुलना में देश में संकर गोपशुओं एवं भैंस की संख्या में क्रमशः 22.8 प्रतिशत एवं 8.9 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जबकि देशी गोपशु कम हुए हैं। जिससे यह स्पष्ट होता है कि 2007 की तुलना में देश की पशुसंख्या में कमी आई है।

भारतीय मौसम की परिस्थितियों के कारण कृषि को सदैव मानसून का जुआ माना जाता रहा है। अतः भारतीय कृषक यदि पूर्ण रूपेण कृषि पर निर्भर रहे तो उन्हें आने वाले समय में आर्थिक विपत्तियों का सामना करना होगा। राजस्थान की प्राकृतिक परिस्थितियां जहाँ एक और कृषि के लिए अपेक्षाकृत प्रतिकूल रही है। वही पशुपालन के लिए अनुकूल है। विशेषतः सम्पूर्ण पश्चिमी राजस्थान में पशुपालन मुख्य उद्यम रहा है। आज भी आजिवीका के लिए पशुपालन की मुख्य भूमिका रही है। परन्तु पृथक व्यवसाय के स्वरूप में इसे अधिक बढ़ावा नहीं दिया गया है।

पशुपालन का प्रारम्भिक स्वरूप निर्वाहक अर्थात् स्वंय के परिवार के पालन हेतु रहा है। यह स्वरूप आज भी अधिकांश अंचलो में व्याप्त है। विगत दशकों में पशुपालन की व्यापारिक सरंचना उभर कर आयी है। जिससे अब कृषको का ध्यान पशुपालन के व्यापारिक स्वरूप पर भी जाने लगा है। परन्तु उनकी पालन पद्धतियां अभी भी प्राचीन है। साथ ही बढती जनसंख्या में प्रोटीन की मांग भी बढती जा रही है। 2011 में जनसंख्या 121 करोड़ हो गई थी। तथा प्रति व्यक्ति 230 ग्राम दूध प्रति दिन की न्यूनतम आवश्यकता से आंका जाए तब भी पूर्ति

करना कठिन हो रहा है। इसी कारण सभी का ध्यान डेयरी उद्योग ने आकर्षित किया जो अब प्रगति पर रहा है। इसी प्रकार अन्य पदार्थ जैसे मांस, चमडा, ऊन आदि की मांग भी बढती जा रही है। राजस्थान में पशुपालन से शुद्ध घरेलू आय का 15 प्रतिशतप्राप्त होता है। राजस्थान भारत में उत्पादित दूध का 10 प्रतिशत उत्पादन करता है। इसी प्रकार ऊन के उत्पादन में 40 प्रतिशत तथा माँस के उत्पादन में लगभग 30 प्रतिशत योगदान है।

अध्ययन क्षेत्र(Proposed Study Area)

टोंक जिला राजस्थान के उत्तरी पूर्व मध्य भाग में स्थित है। यह अपने भौगोलिक स्थिति के कारण अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसका अधिकतर भाग बनास नदी से सिंचित है। इस क्षेत्र की कृषि क्षमता का विकास सिंचाई सुविधाओ में सुधार से हुआ है। टोंक जिले का क्षेत्रीय विस्तार –75^{0}19'से 76^{0}16'पूर्वी देशान्तरो तथा 25^{0}41'से 26^{0}24'उत्तरी अक्षांशों के मध्य स्थित है। इसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 7194 वर्ग किलोमीटर है।

टोंक राजस्थान की राजधानी जयपुर से दक्षिण में 100 किमी दूर राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 12 पर अवस्थित है। अतः टोंक के उत्तरी भाग पर जयपुर, दक्षिण भाग पर बूंदी व भीलवाड़ा, पश्चिम में अज़मेंर, पूर्व में सवाई माधोपुर, जिले की सीमा रेखा मिलती है। टोंक जिले को 7 तहसीलों में विभक्त किया गया है।

टोंक, देवली, मालपुरा, निवाई, टोडारायसिंह, तथा उनियारा, पीपलू तहसीलों की जलवायु अर्द्धशुष्क एवं मानसूनी है। जिसका प्रभाव भौतिक वातावरण के साथ साथ जैविक वातावरण पर पडता है। जलवायु के विभिन्न तत्व जैसे तापमान, वर्षा, आर्द्रता, पवन, वायुदाब आदि प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से कृषि कार्यो पर अपना प्रभाव डालते है। टोंक में जनवरी सबसे सर्द रहता है जो 10^{0}सै0 औसत तापमान रहता है। जून का महिना सबसे गर्म रहता है।

टोंक जिले की औसत समुद्रतल से उंचाई लगभग 264.32 मीटर है। यह सामान्य उंचाई पर समतल बना हुआ है। इसकी पहाडियां चट्टानी किन्तु झाड़ियों से मुक्त है। इस जिले को बनास नदी दो भागोंमेंउत्तरी तथा दक्षिणी में विभाजित करती है। यहां की भूमि उपजाऊ है। भूमित जल सीमित है। जिले का सामान्य ढाल उत्तर पूर्व से दक्षिण पूर्व की और है।

टोंक जिले की पहाडियाँ अरावली श्रृंखला की है। जनगणना 2011 के अनुसार टोंक की कुल जनसंख्या 14,21,711 है, जो की राज्य की जनसंख्या का लगभग 2.07 प्रतिशतहै। इसमें पुरूष तथा महिलाओ की संख्या क्रमशः 729390 व 692321 है।

जिले की औसत जनसंख्या का घनत्व 198 व्यक्ति प्रति वर्गकिलोमीटर है। जिले में शहरी जनसंख्या 22.36 प्रतिशतव ग्रामीण जनसंख्या 64 प्रतिशतहै। जो मुख्यतः कृषि आधारित है। लिंगानुपात प्रति हजार पुरूषो पर 949 स्त्रियाँ है।

राजस्थान में जलवायु शुष्क तथा अर्द्धशुष्क है। अतः यहाँ कृषि का विस्तार अधिक नहीं होता है। किन्तु यह स्थल पशुपालन के लिए उपयोगी है। टोंक जिले में अर्धशुष्क जलवायु प्राप्त होती है। जो पशुपालन को बढावा देती है। पशुपालन मुख्य व्यवसाय होने के साथ साथ कृषि के साथ गौण उद्यम के रूप में भी किया जाता है। अतः यह कहां जा सकता है की ये एक दूसरे के सम्पूरक व्यवसाय है। कृषि में कई कार्य सम्पन्न करने के लिए पशुधन का प्रयोग छोटे किसानो द्वारा टोंक में किया जाता है।

शोध का महत्व (Importance of Proposed Research Work)

टोंक क्षेत्र में पशुधन का कृषक समाज पर सामाजिक–आर्थिक प्रभाव को विषयवस्तु बनाकर किया जाने वाला अध्ययन शोध क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्रस्तावित शोध भूगोल विषय के सभी आयामों भौतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय पहलुओं का अध्ययन करता है। इसलिए प्रस्तावित अध्ययन संतुलित आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन के माध्यम से पशुपालन, प्रशासन, अर्थशास्त्र, सामाजिक कार्य शोध इत्यादि क्षेत्र में लगे लोगों के लिए उपयोगी होगा।

प्रस्तावित अध्ययन जहाँ एक और प्रदेश में पशुपालन व्यवसाय को उन्नत कर कृषि पर निर्भरता को कम करने में मिल का पत्थर साबित होगा। साथ ही पशुपालन व्यवसाय का स्तर, अर्थव्यवस्था में योगदान, पशुओं का श्रेणीवार वितरण वर्षा एवंजल संसाधनों की स्थिति पशुपालन विकास के लिए आधारभूत ढाँचा, कृषि पर निर्भरता में कमी, पशुपालकों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति संबंधित तथ्यों की सही जानकारी प्राप्त हो सकेगी, जिससे पशुपालकों एवं कृषकों की आर्थिक, सामाजिक स्थिति को उन्नत करने का प्रयास किया जा सकेगा।

इस क्षेत्र के फलस्वरूप भविष्य में आवश्यकतानुसार पशुपालन, कृषि से संबंधित योजनाओं के विकास, निर्धारण एवं क्रियान्वयन संबंधी कार्य किये जा सकेंगे।

पशुपालन न केवल कृषि का सहायक है। अपितु खाद्य सुरक्षा का भी आधार है। क्योकि बढती जनसंख्या के कारण खाद्य सामग्रियों की मांग भी निरन्तर बढ रही है, जिसेअनदेखा नहीं किया जा सकता। साथ ही प्राचीन समय से पशुओ को भार वाहक के रूप में प्रयोग में लाया जाता था। आज भी राजस्थान में ऊँट का प्रयोग परिवहन के रूप में किया जाता है। टोंक जिले में अनुमानतः 10 से 20 लाख पशुओ की संख्या है परन्तु इनका व्यवसाय पालन

अभी तक संभव नही हो पाया है। उन कारणो का निदान करना इस अध्ययन से संभव हो पाएगा।

प्रस्तावित अध्ययन पशुपालन योजनाकर, सामाजिक, कार्यकर्ता, प्रशासन, अर्थशास्त्रियों, पशुपालको, पर्यावरणविदों एवं शोधार्थियो द्वारा पशुपालन की उपयोगिता तथा कृषक समाज के परिप्रेक्ष्य में इनकी आवश्यकता को समझाने मेंउपयोगी सिद्ध होगा। अध्ययन के माध्यम से टोंक जिले के कृषक समाज की सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों का विश्लेषणात्मक विवरण किया जा सकेगा। तथा पशुपालन व्यवसाय की आधुनिक आवश्यकताओं को समझा जा सकेगा।

साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

वर्तमान समय के ग्रामीण आर्थिक विकास में पशुपालन एक आधार हैं जो कृषि के बाद दूसरा महत्पवूर्ण स्थान रखता है। पशुपालन विकास द्वारा ग्रामीण आर्थिक तंत्र को सुदृढ़ता प्रदान की जा सकती है। विश्व स्तर से लेकर राष्ट्रीय व राज्य स्तर पर बहुत से विद्वानों वैज्ञानिकों तथा भूगोंलवेताओं ने विभिन्न सांख्यिकीय विश्लेषणात्मक विधियों द्वारा पशुपालन पद्धति पर कार्य किया है। पशुपालन पद्धति भारतीय इतिहास का नवीन तथ्य नही है। इसका उल्लेख हमें वैदिक काल की कथाओं से तथा अन्य प्राचीन् ग्रन्थों से मिलता है। उस समय एक सम्पूर्ण ग्राम गो धन पर निर्भर हुआ करता एवं कृषि को पशुपालन के सहायक व्यवसाय के रूप में करते थे।

चन्द्रगुप्त मौर्य 293 ई.पू के समय कौटिल्यके अर्थशास्त्र में यह वर्णन प्राप्त होता है कि उस काल में जब अनावृष्टि के कारण पशुओं के लिए जीवित रहना कठिन हो गया। उस समय राजा ने पशुओं के लिये चारा उपलब्ध करवाने पर विशेषप्रयास करवाये गये। क्योकि पशुधन मानव की अमूल्य सम्पदा है तथा किसी भी राज्य में आर्थिक व सामाजिक दृष्टिकोण से विशेष महत्व रखता है।

भूगोल के प्रांरभिक काल में **वान्थ्यूनेन (1826)** ने कृषि अवस्थिति से सम्बन्धित विचार प्रस्तुत किए जिसमें पशुओं से प्राप्त होने वाली वस्तुओं के आधार पर उनका कृषि के साथ नियोजित समायोजन दिखाया। प्रथम पेटी में दूध व माँस की उपलब्धता को लेकर पशुपालनपर जोर दिया गया। साथ ही मिश्रित कृषि की पेटी में उनका विशेष स्थान निर्धारित किया गया।

इसी प्रकार **व्हीटलसी (1936)** ने विश्व के कृषि प्रदेशों का निर्धारण किया। जिसमें पशुपालन व चारण के आधार पर कुछ विशेष प्रदेशों का निर्धारण किया जो किविशेषरूप पशुपालन आधारित थे। थॉम्वसन 1926 ने ब्रिटेन व डेनमार्क की कृषि उत्पादकता की व्याख्या फसलों के कुल उत्पादन और पशु उत्पादन के आधार पर की है।

शास्त्री (1993) ने दक्षिणी भारत के विशेष सन्दर्भ में पशुपालन पर किए अध्ययन में पशुपालन पर किए अध्ययन में पशुपालन से प्राप्त आय का प्रभाव वहाँ के रहन सहन पर परिलक्षण का विवेचन किया है।

कुमार अंजनी (1999) ने पशुपालन की वृद्धि के विषय पर किये अध्ययन में समजलवायु व्यवसाय में वृद्धि के लिये आवश्यक बताया।

डेलगाडो (1999) ने Global Food Demand and the contribution oflivestock as we enter the new millenniumमेंपशुपालन से प्राप्त उत्पादों की मांग तथा पशुओं की समस्या के निराकरण का विश्लेषण किया है।

भूमि और पशुपालन सर्वेक्षण (2002)में भारत में भूमि की स्थिति उसके उपयोग तथा विस्तृत सर्वेक्षण किया गया एवं भविष्य में चारागाह भूमि का कैसे विवेकपूर्ण किया व संरक्षण हो पर विस्तृत विचार प्रस्तुत किये गये है।

राधाकृष्णन और रेड्डी (2002) ने खाद्य सुरक्षा और पशुपालन पर किये अध्ययन की समस्या उनके निराकरण के उपाय तथा खाद्य सुरक्षा पर विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

Ghalrat khan (1991-2003)**सूखे का अर्थशास्त्र**' पुस्तक में उडीसा राज्य में कृषि और पशुधन सूखे के प्रभावों को प्रस्तुत किया है।

ओजोस नेग्रोस अनुसंधान समूह द्वारा लिखित पुस्तक " सूखे का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव"में पशुओं और वन्य जीवों, वन उत्पादकता में कमी, किसानों की कृषि से कम आय बेरोजगारी निम्न जीवन स्तर,राजस्व व बडे व्यवसायों के लिए बैंक ऋण का वर्णन किया गया है।

डॉ. भारत झुन्झुनवाला ने "ट्रेडशीनलएग्रीकल्चर एण्ड वाटर हार्वेस्टिंग टेक्नोलोजीज ऑफ द थार डेजर्ट"में थार रेगिस्तान में जल संरक्षण पशुपालन तथा कृषि की परम्परागत तकनीकी का विवेचन किया है।

ग्रेविस संस्था द्वारा प्रकाशित बुकलेट "खडीन"में पशुपालन कृषि के लिए वर्षा जल का खडीन संरचनाओं के माध्यम से संरक्षण के उपाय सुझाये गये है। जबकि 'टांका व नाडी" "स्वच्छ पानी की महिला" उन्नत कृषि मार्गदर्शिका" "परम्परागत पेयजल स्त्रोत" आदि बुकलेट भी प्रकाशित की गई है।

हरिशंकर शर्मा व ए.के. सिन्हा (1990) ने इकोलॉजी ऑफ लैण्ड एण्ड वाटर मेंनेजमेंन्ट ड्राइलैण्ड एकसपिरियन्स " के अन्तर्गत राजस्थान के सन्दर्भ में पशु संसाधन प्रबन्धन, भूमि व जल प्रबन्धन, बंजर भूमि का प्रबन्धन, जैव पर्यावरण अर्न्तसम्बन्ध भूमि पर मृदा अपरदन तथा इसका निवारण भू आकृतिक मानचित्रों के माध्यम से धरातलीय विषमताओं का विवेचन किया गया है।

Hand Book of Animal Husbandry and Dairying By :- V.T. Subbiah Mudaliar

प्रस्तुत पुस्तक में दक्षिणी भारत के कृषि प्रारूप को आधार बनाकर उसमें पशुपालन का वैज्ञानिक स्वरूप प्रदर्शित किया है।

पशुपालन के महत्व, वर्गीकरण जनसंख्या तथा खाद्यान वितरण, पर्यावरणीय दशाओं, वर्षा तथा मृदा की भूमिका तथा दक्षिणी भारत में पशु को विभिन्न प्रजातियों का वर्णन किया गया है।

उपर्युक्त साहित्य समिक्षा से निष्कर्ष निकलता है कि पशुपालन प्रारूप पर व्यापारिक दृष्टिकोण का विकास अभी तक राजस्थान के जिलों व मुख्यतः टोंक में नही हो पाया है। क्योकि यहॉ पशुपालन का व्यापारिक दृष्टिकोण अभी तक विकसित नहीं किया जा सका है।

शोध अन्तराल (Research Gaps Identified in the Proposed field of Investigation)

मेंरी जानकारी के अनुसार राजस्थान के टोंक जिले मेंउपस्थित अनुसंधान शीर्षक पर कोई बडा शोध कार्य नही किया गया है। पशुपालन व्यवसाय को तथा उससे जुडे फसल प्रारूप की उत्पादकता को लेकर तुलनात्मक विश्लेषण अपेक्षाकृत सीमितमात्रा में हुआ है। राजस्थान राज्य तथा विशेषतः टोंक जिले के अध्ययन की इकाई बनाकर किये गये तत्संबंधी प्रयास अत्यल्प दिखाई देते है।

इस शोध कार्य के अन्तर्गत टोंक जिले में पशुपालन तथा कृषक समुदाय के आर्थिक तथा सामाजिक जीवन पर पशुपालन के प्रभाव का अध्ययन किया जायेगा। यहां के पशु किस प्रकार प्राकृतिक परिस्थितियों से समायोजन करते है। तथा पशुपालन से प्राप्त आय का प्रदेश के विकास में क्या योगदान है, आदि का विस्तृत अध्ययन किया जायेगा।

शोध उद्देश्य(objectives)

प्रस्तावित शोध कार्य टोंक जिले के सन्दर्भ में पशुपालन की स्थिति एवम् कृषक समाज के सामाजिक आर्थिक विकास पर प्रभाव का मूल्यांकन करने हेतु सम्पन्न किया जायेगा। इस शोध कार्य के निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किये गये है

1. अध्ययन क्षेत्र की भौगोलिक, आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. अध्ययन क्षेत्र में पशुपालन की वर्तमान दशा एवं स्तर का विश्लेषण करना।
3. अध्ययन क्षेत्र में पशुपालन से कृषक समाज पर सामाजिक आर्थिक प्रभावो का मूल्यांकन करना।
4. अध्ययन क्षेत्र में पशुपालन विकास के लिए उपलब्ध आवश्यक आधार भूत ढाँचा ज्ञात करना।
5. अध्ययन क्षेत्र में पशु स्वास्थ्य की स्थिति ज्ञात कर उसे उन्नत स्वरूप प्रदान करने के सुझाव देना।
6. क्षेत्र में कृषि एवं पशु आधुनिकीकरण का स्तर ज्ञात करना।
7. क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में पशुपालन का योगदान ज्ञात करना।
8. अध्ययन क्षेत्र में पशुपालन को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।
9. क्षेत्र में वैज्ञानिक नवाचार से पशुपालन का सतत् विकास का एक मॉडल प्रस्तुत करना।

परिकल्पनाएँ (Hypothesis)

1. अध्ययन क्षेत्र टोंक जिले में पशुपालन हेतु आधारभूत सुविधाओं के अभाव के कारण इस व्यवसाय की वृद्धि अपेक्षाकृत धीमी रही है।
2. कृषि के यंत्रीकरण एवं आधुनिकीकरण के फलस्वरूप पशुपालन के विकास पर नकारात्मक प्रभाव रहा है।
3. कृषक समाज के आर्थिक स्तर को स्थिरता प्रदान करने में पशुपालन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।
4. कृषक समाज का सामजिक एंव आर्थिक पिछडापन जिले में पशुपालन व्यवसाय को अपेक्षित वृद्धि नहीं दे सका है।
5. पशुपालन के लिए उपलब्ध चारागाह एवं सार्वजनिक भूमि पर बढता अतिक्रमण पशुपालन व्यवसयाय पर नकारात्मक प्रभाव प्रदर्शित करता है।
6. बीसलपुर सिंचाई परियोजना के विकास से पशुपालन व्यवसाय प्रभावित हुआ है।

शोध विधि (Research Methodology)

किसी भी क्षेत्र के शोध कार्य हेतु उचित शोध प्राविधि का होना आवश्यक है। इसके अभाव में सही निष्कर्षो तक पहुंच पाना संभव नहीं हो पाता। अतः प्रस्तावित शोध कार्य के निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु उचित शोध प्राविधि का निर्धारण किया जाएगा। प्रस्तावित शोध कार्य गुणात्मक/विवरणात्मक प्रकार का है जो प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों के आधार पर सम्पन्न किया जायेगा।

प्राथमिक आँकड़े

अध्ययन क्षेत्र में कृषक समाज पर पशुपालन के प्रभावो का मूल्यांकन करने एवम् उनकी समस्याओं को सामने लाने के लिए प्राथमिक आँकड़ों का संकलन अध्ययन क्षेत्र से शोधकर्ता द्वारा स्वयं किया जाएगा। शोधकर्ता द्वारा प्राथमिक आंकडो के संकलन के लिए निर्धारित प्रारूप में निर्मित (Structural Form) साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से आंकडो का संकलन किया जाएगा। संकलन से पूर्व अनुसूची के माध्यम से अध्ययन क्षेत्र पाइलट सर्वे (Piolet Servey) भी किया जायेगा। साक्षात्कार हेतु उत्तर दाताओं का चयन करने के लिए उचित निर्देशन पद्धति (शोद्देश्य पूर्ण) के द्वारा किया जाएगा।

द्वितीयक आँकड़े

अध्ययन क्षेत्र की भौगोलिक सूचना, जनांकिकीय सूचना, कृषि सूचना पशुपालन संबधी आँकडो व अन्य आवश्यक सूचनाओं के लिए द्वितीयक आँकडों का प्रयोग किया जाएगा। उपयुक्त द्वितीयक आंकडो के संकलन के लिए विभिन्न सरकारी अर्द्ध सरकारी एवम् गैर सरकारी संगठनो से प्राप्त प्रकाशित व अप्रकाशित रिपोर्टो, अभिलेखो, व पुस्तको के माध्यम से आँकड़े संकलित किए जाएंगे। जिसमें भारतीय सर्वेक्षण विभाग, भारतीय जनगणना विभाग, कृषि विभाग, पशुपालन विभाग व अन्य विभागो से आंकडे संकलित किए जाएंगे। उपर्युक्त आंकडो के संकलन के लिए विभिन्न विभागो की वेबसाइट से भी आंकडो का संग्रहण किया जाएगा

- जिला सांख्यिकी रूपरेखा, आर्थिक एवं सांख्यिकीय निदेशालय, जयपुर।
- भारतीय जनगणना रिपोर्ट 2011, जनगणना कार्य निदेशालय, जयपुर।
- राजस्थान कृषि निदेशालय, जयपुर।
- भू–राजस्व मण्डल, अजमेंर।

- राज्य आपदा प्रबंधन एवं राहत विभाग, जयपुर।
- राजस्थान सिंचाई विभाग, जयपुर।
- जियोलोजीकल सर्वेक्षण विभाग, जयपुर।
- केन्द्रीय भू–जल बोर्ड, जयपुर।
- कृषि शोध संस्थान, जयपुर।
- राजस्थान पशुपालन निदेशालय, जयपुर।
- पशु चिकित्सालय विभाग।
- जिला पशुपालन अधिकारी एवं पशु चिकित्सालय टोंक।
- भेड़ एवं ऊँन शोध एवं अनुसंधान केन्द्र, अविकानगर टोंक।
- राष्ट्रीय ऊँट शोध संस्थान, बीकानेर।
- दूग्ध डेयरी संकलन केन्द्र टोंक
- विभिन्न विभागों के शोध की रिपोर्ट

इनके अलावा पटवारी, गिरदावर, पशु स्वास्थ्य केन्द्र पर जाकर अध्ययन सामग्री, आँकड़े जुटाना तथा उनका सत्यापन किया जाना प्रस्तावित है।

सांख्यिकी विधियाँ(Analysis of Data)

प्राथमिक तथा द्वितीयक आँकड़ों के विश्लेषण एवम् उचित निष्कर्षो तक पहुंचने हेतु विभिन्न सांख्यिकीय विधियो द्वारा आँकड़ों को विश्लेषित किया जाएगा। जिसके अन्तर्गत मुख्य रूप से सारणीकरण, माध्य, सहसम्बन्ध तथा अन्य उचित विधियों का प्रयोग किया जाएगा।

Presentation of Analysed Data

विभिन्न सांख्यिकी विधियों द्वारा विश्लेषित किए गए आंकडो प्रस्तुतीकरण के लिए आरेख, आलेख, सारणी व मानचित्रो के माध्यम से प्रस्तुत कियाजाएगा। इसके अतिरिक्त आँकड़ों के संग्रहण और विश्लेषण के लिए विभिन्न कम्प्यूटर प्रोग्राम उपयोग में लिए जाएंगें। जैसे :–MS Word, MS Excel, MS Power Point,psp , SPSS, Coral Draw, Arc GIS

अध्याय योजना (Chapterisation Scheme)

1. परिचय

    1.1 परिचय

    1.2 अध्ययन का महत्व

    1.3 साहित्य समीक्षा

    1.4 शोध उद्देश्य

    1.5 परिकल्पनाएं

    1.6 विधितंत्र

    1.7 अध्याय योजना

2.अध्ययन क्षेत्र का भौगोलिक स्वरूप

    2.1 परिचय

    2.2 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

    2.3 स्थिति एवं विस्तार

    2.4 प्रशासनिक स्वरूप

    2.5 परिवहन तंत्र

    2.6 उच्चावच

2.7 खनिज संसाधन

2.8 अपवाह तंत्र

2.9 जलवायु (वर्षा, तापमान, वायुदाब, आर्द्रता)

2.10 मृदा

2.11 भूमि उपयोग स्वरूप

2.12 कृषि एवं विभिन्न फसलें

2.13 आर्थिक क्रियाएँ

2.14 जनांकिकीय स्वरूप

2.15 व्यवसायिक संरचना

3 पशुपालन का स्तर :

3.1 पशुपालन का आर्थिक सामाजिक महत्व

3.2 पशुओं के प्रकारों का वर्गीकरण

3.2 पशुओं की नस्लें व उनकी उत्पादक क्षमता

3.3 जिले में पशुओं की संख्या

3.4 पशुओं का क्षेत्रीय घनत्व तथा वितरण

4 पशुपालन व्यवसाय के लिए आवश्यक आधारभूत ढाँचे की समीक्षा

4.1 पशुओं के लिए जलीय उपलब्धता

4.2 आवास व्यवस्था

4.3 खाद्य सामग्री एवं चारागाह भूमि

4.4 पशु स्वास्थ्य एवं चिकित्सा

4.5 पशु उत्पाद परिवहन एवं मार्केटिंग व्यवस्था

4.6 पशु उत्पाद भंडारण व्यवस्था

4.7 बैकिंग एवं कॉपरेटिव सोसायटी एवं अन्य विभिन्न व्यवसाय

4.8 दुग्ध संकलन केन्द्र एवं डेयरियाँ

5 **प्रमुख पशु उत्पाद तथा उनका अर्थव्यवस्था में योगदान**

5.1 दुग्ध उत्पाद (दूध, घी, पनीर, बटर, चीज)

5.2 मांस उत्पाद (मटन, चिकन, मत्स्य)

5.3 ऊन एवं ऊन निर्मित उत्पाद

5.4 चमड़ा उत्पाद व व्यवसाय एवं इससे निर्मित

5.5 पशु उत्पाद का स्थानिक व्यापार

5.6 कृषक समाज की आय में भूमिका

6 **कृषक समाज की आर्थिक–सामाजिक स्थिति एवं पशुपालन का प्रभाव**

6.1 शिक्षा का स्तर एवं पशुपालन पर प्रभाव

6.2 पारिवारिक संरचना एवं जीवन स्तर

6.3 पशुपालकों का स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधा का स्तर

6.4 पशुपालकों का सामाजिक स्तर

6.5 पशुपालकों का आर्थिक स्तर एवं पशुपालन का प्रभाव

7 **सारांश, सुझाव एवं निष्कर्ष**

Bibliography

1. Ahmad M. and Ureta B.E.B. (1995), "An Econometric Decomposition of Dairy Output Growth" *American Journal of Agricultural Economics,* Vol. II, No.4 November, pp. 914 – 921.
2. Batra, S. (2005), "Livesatock in India –A Sociological Analysis" Vista International Publishing House, Delhi, India, pp. 67-68.
3. Bhaskaran, S. (1996), "Culture's Consequencesa: Dairy Market Opportunitiesa in India" *Marketing Bulletin*, Vol. 7, Article 5, pp. 39-50.
4. Cunningham, K. (2009), "Rural and Urban Linkagesa: Operation Flood's Role in India's Dairy Development " IFPRI Discussion Paper 00924, November.
5. Dang G.P. and Nata, K.M.(2004), "Indian Dairy Industry-Changing Scenario, Its Problems and Future Prospects" *Agricultural Situations in India*, Vol. LX, No. 11, February, pp. 712-714.
6. Das, C.R. (2010) "Dairying and Rural Development, Discovery Publishing House Pvt. Ltd., New Delhi, India, pp. 5-6.
7. Dayakar, R.B. et.al (2005), "Trade on Livesatock Products of India- an Economic Analysis" *Agricultural Situation in India,* Vol. LXII, No. 10, January, pp. 703-710.
8. .Foltz D. J. (2004), "Entry, Exit and Farm Size: Assesasing an Experiment in Dairy Price Policy" *American journal of Agricultural economics,* Vol. 86, No.3, August, pp. 594 – 604.
9. Ganga and Jain, D.K. (2012), Impact of Dairy Financing Through Self-help Groups on Income and Employment Generation in Jaipur District of Rajasthan" Indian J. Dairy Sciencesa, 65(4), pp. 337-341.
10. Ghosh, B. (2012) Livesatock Production Management, Bio-Green Books, New Delhi, India, pp. 185.

11.Ghosh, A.K. and Maharajan, K.L. (2001), "Impacts of Dairy Co-operativesa on Rural Income Generation in Bangladesah" Journal of International Development and Co-operation, Vol.2, No.1, pp. 91-105.

12.Hemme, T. et al. (2003), "A Review of Milk Production in India with Particular Emphasis on Small-Scale Producesa" *PPLPI* Working Paper No. 2, FAO. Italy

13.Iqubal, M.A. (2010) "Role of Livesatock Husbandry on Rural Transformation in North India: A Case Study" *RavijaZaGeografijo – Journal for geography*, Stevilka 5–2, pp. 83 -94.

14.Jaisridhar, P. et.al. (2012), "Initiating Second White Revolution in India Through Public Private Partnership" International Journal of Food, Agriculture and Veterniary Sciencesa, Vol. 2 (3), September-December, pp. 74-84.

15.Jeffrey, T.L. and Harry de G. (1985) "Regulation in a Dynamic Market:The U.S. Dairy Industry." *American Journal of Agricultural Economics,* Vol. 67, No. 4, November, pp. 821-832.

16.Karmakar, K.G. and Banerjee, G.D., (2006), "Opportunitiesa and Challengesa in the Indian Dairy Industry" *Technical Digesat* , Vol. 9, September, pp.-24-27.

17.Kar, N. (2002) Animal Husbandry and Rural Development, Resatructuring and Planned Development of the Bovine Economy, Deep And Deep Publications, Pvt. Ltd., Delhi, India, pp. 181.

18.Kele, V.D. et al. (2014), "Impact of Dairy Farming on Socio-economic condition of Small Farmers: A Case Study" The International Journal of Humanitiesa& Social Studiesa, Vol. 2, Issue 5, pp. 256-260.

19.Khan, A.G. (2000) "Poultry Production Scenario of India in New Millennium" *Indian Farming,* Vol. 50, No. 1, April, pp. 19-24.

Journal of Logistics and Supply Chain Management Perspectivesa, Vol.2, No.4, October-December, pp. 791-800.

31 Kumar, S.(2006) "A Growth Profile and Future of Livesatock Sector in India" *Agricultural Situationin India,* Vol. LXII, No. 2, May, pp. 91-99

32 Kumar, S.S. et al. (2012) *"Strategiesa for sustainable Dairy farming in India: A Review"* Resaearch Journal of Recent Sciencesa, , Vol. 2, pp. 42-44.

33 Maity, S.B.and Das M.M (2000) "Goat Farming-a Profitable Enterprise at Bundelkhand Region" *Indian Farming,* Vol. 50, No. 8, November, pp. 28-30

34 Manish, S. and Tanka, H. (2007) "The Impact of Dairy Co-operative of Dairy Co-operative on Women Empowerment" *Sabaragamuwa University Journal,* Vol. 7, No. I, pp. 66-77.

35 .Marsh J.M. (1988) "The Effects of Dairy Termination Programs on Live Cattle and Wholesaale Beef Pricesa" *American Journal of Agricultural economics,* Vol.70, No. 4, November pp. 919-928.

36 Mathur, B.N(2000), "Milk and Dairy Products for Nutritional Security and Health" *Indian Farming*, Vol. 50, No. 3, June, pp 13-16.

37 Mathur, B.N. (2000), "Current Problems and Challengesa Confronting the Dairy Industry in India" Asian-Aus. J. Aṇim.Sci. July, p.p. 447-452.

38 Mohan, P.S. and Singh, J. (2008) "Dairy Development in the New Millennium- The Second White Revolution" Deep & Deep Publications, Pvt. Ltd. New Delhi,, India, pp. 80

39 Nyholm, K. et al (1974) "Socio-economic Aspects of Dairy Development: Report From the Bangalore Milkshed Area" Vol-9, No-52, December 28, pp-A127-A136.

40 Radder S.K. and Bhanj, S.K.,(2011), "Perception of Dairy Farmers of District in North Wesatern Part of Karnataka State, India Regarding Clean Milk Production." *Veterinary World.* Vol. 4, No. 2, February, pp. 79-81.

20.Khan, N. et. al. (2005) "Livesatock Revolution in Monsoon Asia During the Post Economic Reform Period".*AsianProfile,*Vol. 36, No.5, October, pp. 529 – 544.

22Khan, N. and Iqubal, M.A. (2008) "Livesatock Husbandry and Its Impact on Employment Generation in Aligarh District, UP (India)" *African Journal of LivesatockExtension,* vol. 6, July, pp. 20 – 24.

23 Khan, N. et al. (2009)"Livesatock Husbandry, Rural Workforce and Employment Generation A Case Study", *The Geographer*, Vol. 56, No.2, July,pp. 77-87.

24 Khan, N. and Iqbal,M.A. (2009) "Animal Husbandry Plays a Significant Role in Economic Viability of Marginal and Small Farmers in Aligarh district" *Indian farming*, Vol. 59. No. – 4, pp 21-33, July.

25 Khan, N. and Iqubal, M.A. (2010) "Livesatock Revolution and Its Impacts and Sustainability of Marginal and Small Farmers in India: A Case Study" *RevijaZaGeographijo- Journal For Geography,*vol 5, No. 2, pp. 95-108.

26 Khan, N. et al. (2011) "Livesatock Husbandry in Rural Urban Fringe of Aligarh Town: Environmental Sustainability". *Advanced Journal of geographical world,* vol. 1, No. 2, June, pp. 18-27.

27 Kulkarni, S. (1997) "A case for Review of International Food Laws Relating to Dairy products in India" *Indian Journal of dairy and Bioscience,* Vol. 8, pp. 45-47.

28 Kulkarni, V.V. et.al (2000) "Rearing of Male Buffalo Calvesa for Quality Meat Production" *Indian Farming,* Vol. 50, No. 1, April, pp. 31-35.

29 Kulshresahtha, L.R. and Gogia, J.,(2010) "Sustainable Dairy Development and Women Empowerment Need and Strategiesa (With Special Reference to Agra District, Uttar Pradesah) *The Sociocan,* Vol. 2(3&4), pp. 49-52.

30 Kumar, R. and Prabhakar, R.K. (2013) " Opportunitiesa and Challengesa in Indian Dairy Industry Supply Chain: A Literature Review" International

41 Rajendran, K, and Mohanty, S.(2004), "Dairy Co-operativesa and Milk Marketing in India: Constraints and Opportunitiesa" *Journal of Food Distribution Resaearch,* Vol.35(2), July, pp. 34-41.

42 Ramananda, M.S. (2012), "Dairy Co-operativesa-Viable Tool for Rural Development" International Journal of Resaearch in IT & Management, pp. 2231-2237.

43 Rathod, P.K. et. Al (2011), "Participation of Women in Dairy Farming in Karnataka" Indian Resas. J. Ext. Edu, II(2), May, pp. 31-36.

44 Raut K.C. et al. (2002), *"Disparitiesa in Livesatock Development in India"* Journal of Ind. Soc.Ag. Statistics, Vol. 55(1), pp. 108-115.

45 Reddy, B.P. (2010), "Growth and Trend Discerning of Indian Dairy Industry" *Asia-Pacific Journal of Social Sciencesa,* Vol. II (2), July-December, pp. 105-125.

46 Sharma, M.L. et.al. (2007), "Potential and Prospects of Dairy Businesas in Uttarakhand: A Case Study of Uttaranchal Co-operative Dairy Federation Limited" *Agricultural Economics Resaearch Review* Vol. 20(Conf. Issue), pp. 489-502.

47 Sharma, V.P. and Singh, R.V. (1993), "Resaource Productivity and Allocation Efficiency in Milk Production in Himachal Pradesah" *Indian Journal of AgriculturalEconomics,* Vol. 48, No. 2, April- June, pp. 201-215.

48 Sheela, K.S. and Ramegowda, A. (23013),"Dairy Co-operative and Empowerment of Women" International Journal of Advanced Social Sciencesa and Humatiesa, Vol.2, No.9, September, pp. 034-042.

49 Shinde, V.S.V (2011) "Socio-economic Profile of Dairy Farmers in Solapur District of Maharashtra State" *Indian Streams ResaearchJournal,*Vol. I, Issue 1, February, pp. 86-100.

50 Shivakumar, K. and Bhanj, S. K. (2011) "Perceptions of Dairy Farmers of Gadag District in North Wesatern Part of Karnataka State, India, Regarding Clean Milk Production" *Veterinary World,* Vol. 4, No. 2, pp. 79-81.

51 Singh S.P. et. Al (1987) "Esatimation of Yield of Livesatock Byproduct at State and National and Level in India" *Agricultural Situation in India,* Vol. XLII, No. 3, June, pp. 159-163.

52 Singh, V. (2002) "Small Dairy Production System in Uttaranchal Hills" *Indian Farming,* Vol. 51, No. 2, March, pp. 23-25.

53 Vyas, B.M. (1999) "India: Emerging Countriesa and WTO" *Bulletin of International Federation,* Vol. 341, pp. 103-104

समाचार पत्रिकाएँ एवं मैग्जिन (News Papers and Magazines)

- भूगोल और आप
- योजना
- वर्ल्ड फोकस
- विज्ञान प्रगति
- आर्थिक समीक्षा 2014–15
- जिला गजेटीयर